REVIEW OF RESEARCH

मैत्रेयी पुष्पा के 'झूलानट' उपन्यास में अभिव्यक्त नारी की समस्याएं

डॉ.बालकवि लक्ष्मण सुरंजे

अध्यक्ष हिंदी विभाग एवं शोध-निर्देशक,
बी.के.बिड़ला महाविद्यालय (स्वायत्त),
कल्याण जिला- ठाणे (महाराष्ट्र)

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

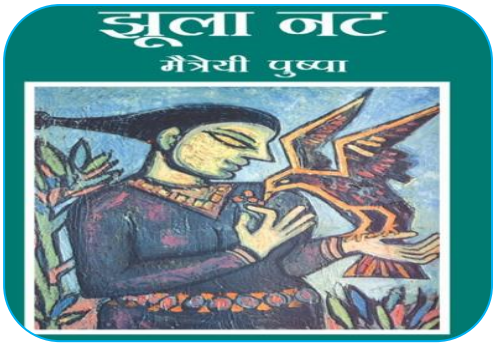

स्वातंत्रोत्तर हिंदी साहित्य की सर्वाधिक प्रतिभाशाली महिला कथाकार मैत्रेयी पुष्पा है, उन्होंने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'झूलानट' में वर्तमान सामाजिक राजनीति, धार्मिक, दार्शनिक और नैतिक समस्याओं को नई दृष्टि से देखने का प्रयास किया और उसे चित्रित किया है। उन्होंने मध्यवर्गीय परिवार में जूझती नारी के संघर्ष और द्वंद्व को एक नया आयाम प्रदान किया है।

मैत्री पुष्पा ने अपने प्रस्तुत उपन्यास 'झूलानट' में बुंदेलखंड की उपेक्षित ग्रामीण जीवन को संपूर्णता के रूप में देखा परखा है। इसमें उन्होंने ग्रामीण संस्कृति, ग्रामीण जीवन की समस्या, नारी का शोषण,उसकी उपेक्षा, अंधविश्वास, रूढ़ियों अभावग्रस्त जीवन व सामाजिक आर्थिक समस्याओं को स्त्री की अस्मिता व पहचान को अत्यंत बेबाकी व मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है। 'झूलानट' उपन्यास में निम्नलिखित समस्याएं हैं :

१. नारी शोषण की समस्या
२. धार्मिक रूढ़ियां एवं अंधविश्वास की समस्या
३. पुत्र मोह की समस्या
४. सामाजिक समस्या
५. स्त्री का दैहिक व मानसिक शोषण
६. दहेज की समस्या
७. परित्यक्ता स्त्री जीवन की समस्या
८. आर्थिक समस्या

नारी शोषण की समस्या –

भारतीय परंपरा में अनादि काल से ही नारी शोषण का शिकार रही है, उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। भारतीय परिवेश के अंतर्गत बहुत सारी धार्मिक,सामाजिक परंपराएं एवं अंधविश्वास के माध्यम से नारी को सदा ही शोषित किया गया है। इसका प्रस्तुत उपन्यास में बड़ी बेबाकी के साथ लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने पाठकों के सामने रखा है। 'झूलानट' उपन्यास में जिस समस्या को सर्वाधिक महत्व दिया गया है- वह है नारी शोषण। इस उपन्यास की नायिका शीलो, बाल किशन की मां सरस्वती, सत्ते की पत्नी सभी शोषित है। सत्ते गाहे-बगाहे अपनी पत्नी को जानवरों की तरह बर्ताव करता है खेलों का भी शोषण उसका पति सुमेर करता है इतना ही नहीं मां भी शोषित व उपेक्षित हैं, वह एक विधवा है जो अपने दीवान बेटे का कभी भी विरोध नहीं कर पाती हैं। इतना ही नहीं बालकिशन भी शीलो मां का पक्ष लेते हुए गाली देता है और उस पर हाथ भी उठा देता है। कहीं-कहीं सत्ते द्वारा अपनी पत्नी के पीटने का उदाहरण भी मिलता है।

२. धार्मिक रूढ़ियां एवं अंधविश्वास की समस्या –

भारतीय समाज में धार्मिक रूढ़ियां, रीति-रिवाज बहुत ही भयानक रूप ले चुकी है। भारत का कोई भी गांव इससे अछूता नहीं है। प्रस्तुत उपन्यास में भी धार्मिक रूढ़ियां, अंधविश्वास एक समस्या के रूप में चित्रित है। बालकिशन शीलो और मां तीनों की चंपादास वैद्य द्वारा बताए गए सभी नुस्खे अपनाते हैं, ताकि शीलो का पति सुमेर वापस शीलो के पास आए और उसे अपना ले। इतना ही नहीं, भारतीय समाज में स्त्री के हाथ की छठी अंगुली को भी दोष माना जाता है। शीलो अपने पति सुमेर को प्राप्त करने के लिए अपनी छठी अंगुली तक का बलिदान करती है। उसे कठिन व्रत उपवास करना पड़ता है। यह एक सामाजिक रूढ़ी परंपरा है। इससे मुक्त होना ही होगा इस संदर्भ में लेखिका मैत्रेयी पुष्पा लिखती है "औरतों को व्रत उपवास का अभ्यास आरंभ से ही डाल

दिया जाता है।"

३. पुत्र मोह की समस्या -

'झूलानट' में लेखिका ने पुत्र मोह की समस्या को भी जगह दी है। पुत्र मोह के चलते मां हमेशा इस बात से भयभीत रहती है कि शीलो कहीं पुलिस में जाकर शिकायत कर देगी कि पहली पत्नी के रहते हुए सुमेर ने दूसरी शादी कर ली। सुमेर के लाख गलतियों के बाद भी मां सुमेर का ही पक्ष लेती है। पुत्र मोह के कारण ही मां शीलो से बालकिशन के साथ बछिया का प्रस्ताव रखती है जब शीलो बछिया करने से इंकार कर देती है, तो मां कहती है कि "हाय ! मैं नहीं जानती थी कि सांपिन को दूध पिला कर बिस भर रही हूं, बेटों की जिंदगानी में... एक दिन यही डस लेगी।"

४. सामाजिक समस्या –

'झूलानट' उपन्यास सामाजिक समस्या प्रधान है। इसमें बुंदेलखंड की पृष्ठभूमि पर व्याप्त ग्रामीण जीवन की सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया गया है। समाज में खानपान, रीति-रिवाज आदि का पालन करना पड़ता है। समाज की यह मान्यता है कि यदि कोई किसी भी रीति-रिवाज को तोड़ता है, तो उसका हुक्कापानी बंद कर दिया जाता है। जब शीलो बालकिशन के साथ बछियां करने से मना कर देती है, तो बालकिशन को बिरादरी से बहिष्कृत कर दिया जाता है।

भारतीय परिवेश में समाज में स्त्रियों को हमेशा से ही तुच्छ दृष्टि से देखा जाता है। इसे भी 'झूलानट' उपन्यास में देखा जा सकता है। विधवाओं के लिए भी सामाजिक बंधन होते हैं, उसका भी उपन्यास में जिक्र होता है । जब मां बालकिशन की रघु के पिता का जुटा हुक्का पी लेती है, तो उसके बाद की प्रतिक्रिया भी सामाजिक समस्या ही है।

५. स्त्री का दैहिक व मानसिक शोषण -

भारतीय परंपरा में अंधविश्वास, रीति-रिवाज, कर्मकांड, पूजापाठ हमेशा से महिलाओं के शोषण के आधार रहे हैं। 'झूलानट' उपन्यास में भी यही शोषण के प्रमुख आधार है। शीलो ही नहीं, बालकिशन की मां, सत्ते की बीवी आदि जितनी भी औरतें हैं, सभी का शोषण दैहिक और मानसिक दोनों ही स्तरों पर होता है। उदाहरण के लिए लेखिका का मंतव्य है 'इसके बाद व्रत उपवासों का सिलसिला, सोलह सोमवार, संतोषी माता का शुक्रवार, केला पूजा के बृहस्पतिवार, शनि ग्रह शांति के शनिवार भाभी सुख सुख कर कांटा होती चली जा रही है। उसका रंग बे रौनक हो गया। चेहरा लंबोदरा, सुंदर दांत बाहर निकल आए।'

६. दहेज की समस्या –

मध्यवर्गीय समाज में दहेज जैसी प्रथा अपना शिकंजा कभी कमजोर नहीं पड़ने देती। दहेज भारतीय समाज के लिए हमेशा एक कमजोर कड़ी बना रहा है। प्रस्तुत उपन्यास में सुमेर भी शीलो से शादी सिर्फ दहेज के लिए करता है। उसे दहेज के रूप में बिस हजार मिले थे। शीलो उसे पसंद नहीं थी। उसने शीलो से शादी सिर्फ नौकरी के लालच में किया है। उसे कभी पत्नी का सुख नहीं देता है। सत्ते भी अपनी पत्नी को इसलिए मारता है कि उससे कोई दहेज नहीं मिला था। मध्यवर्गीय समाज को दहेज दीमक की भांति जुड़ गया है।

७. परित्यक्ता स्त्री जीवन की समस्या –

'झूलानट' उपन्यास में शीलो की व्यथा कथा ही वर्णित है। शीलो जब विवाह करके ससुराल आती है, उसी के साथ उपन्यास की शुरुआत भी होती है और धीरे-धीरे पता चलता है कि जिस सुमेर से उसका विवाह हुआ है, उसने रस्म भर निभाई है, क्योंकि यह ब्याह उसके स्वर्गीय पिता तय कर गए थे। लेकिन इस रस्म का पालन करने के लिए सुमेर किसी भी कीमत पर तैयार नहीं होता है। परिणाम स्वरूप शीलो ब्याही जाकर भी अनब्याही और परित्यक्ता ही रहती है। उसके कठोर व्रत,

उपवास, पूजापाठ एवं वैद्य चंपा दास के तंत्र-मंत्र भी सुमेर के दृढ़ निश्चय को डिगा न सके। ढेरों प्रायोजित श्रृंगार पटार भी सुमिर को पिघला न सके। सारे जी तोड़ प्रयत्नों के बावजूद मां जब 7 साल तक सुमेर को समझाने राजी करने में सफल नहीं हुई और शहर में दूसरी शादी करने से उसे रोक नहीं पाती है। तब थक हार कर अपने दूसरे बेटे बालकिशन के साथ शीलो को लगा देती है।

८. आर्थिक समस्या –

मध्यवर्गीय समाज की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक समस्या रही है। समाज में हमेशा अर्थ को ही महत्व दिया जाता है। प्रस्तुत उपन्यास में भी सुमेर शीलो के साथ विवाह सिर्फ अपने आर्थिक स्वार्थ के लिए करता है। इतना ही नहीं सुमेर शादी के 7 साल बाद भी जब चीजों से मिलता है तो आर्थिक समस्या से ही वह पीड़ित नजर आता है।

इस तरह लेखिका मैत्रेयी पुष्पा जी ने 'झूलानट' उपन्यास के माध्यम से भारतीय नारी का चित्रण कर भारतीय पुरुष प्रधान संस्कृति द्वारा किस तरह नारी का शोषण होता है, इसका बखूबी चित्रण किया है। भारतीय परंपरा में सामाजिक धार्मिक और अंधविश्वास की समस्याएं अनगिनत हैं। इसको प्रमुखता से चित्रित करने का सराहनीय कार्य लेखिका ने किया है। भारतीय परिवेश में पुरुषों से अधिक मोह रहा है, क्योंकि पुरुष उनके वंश परंपरा का वाहक तत्व है, इसीलिए हमारे समाज में स्त्रियों को अपने घर, परिवार तथा समाज में निम्न दृष्टि से देखा जाता है। लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास में पुत्र मोह की समस्याओं को भी बड़ी बारीकी से उजागर करने का सराहनीय कार्य किया है। 'झूलानट' उपन्यास के माध्यम से बुंदेलखंड की पृष्ठभूमि के अंतर्गत भारतीय ग्रामीण जीवन की सामाजिक समस्याओं का तथा उनके रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाजों का चित्रण किया गया है। भारतीय पुरुषों द्वारा पत्नी का शारीरिक तथा मानसिक शोषण किया जाता है, इसको बड़ी ही बेबाकी के साथ प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया गया है। गरीब परिवार दहेज न दे सकने की स्थिति में किस तरह से अनमेल विवाह को राजी होता है और साथ ही साथ अनमेल विवाह के कारण जो समस्यायें समाज में उभरती है उसका भी चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में किया गया है। पति के द्वारा त्यागी गई या नकारी गई नारी समाज में किस तरह से अपमानित जीवन जीने के लिए मजबूर है, इसका भी चित्रण शिलो के माध्यम से लेखिका ने चित्रित किया है। शिलो एक पात्र ही नहीं है, बल्कि वह भारतीय परिवेश की महिला है, जो शोषण का शिकार है। इस तरह लेखिका ने 'झूलानट' उपन्यास के माध्यम से भारतीय समाज में व्याप्त विविध समस्याओं को चित्रित करने का बड़ा ही सराहनीय कार्य किया है।